International Journal of Applied Research 2022; 8(1): 438-445

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(1): 438-
www.allresearchjournal.com
Received: 20-11-2021
Accepted: 24-12-2021

डॉ. नवाब सिंह
हिन्दी विभाग, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नवाब सिंह
हिन्दी विभाग, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

बड़े भाई साहब: बड़प्पन की कृत्रिमता से मुक्ति

डॉ. नवाब सिंह

सारांश
प्रेमचंद आधुनिक भारतीय साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कथाकार हैं | पूरे विश्व और भारत में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले वे हिन्दी के एकमात्र कथाकार हैं | उनका कथा संसार मानवीय अनुभवों की विविधता से भरा हुआ जीवन के ठोस यथार्थ से सम्पन्न है | इस मानवीय अनुभव को प्रेमचंद ने ठोस ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भों और वैचारिक संघर्षों से अर्जित किया था | प्रेमचंद की सम्पूर्ण चिंता और चिंतन के केंद्र में सामान्य मनुष्य है | इस सामान्य मनुष्य को समस्त रूढ़ियों और शोषणों के बंधनों से मुक्त करना ही उनके साहित्य का उद्देश्य है |

कूट शब्द: आदर्शोन्मुख यथार्थवादए सामान्य वर्गए कृत्रिमताए कथानकए मनोवैज्ञानिक सत्यए सोद्देश्यताए विडम्बनाएंए कुरीतियाँए जीवन.अनुभवए आलोचनात्मक दृष्टि

प्रस्तावना
प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं | प्रेमचंद की कहानियाँ ग्रामीण और मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं, मानवीय मूल्यों, पारिवारिक सम्बन्धों, नैतिकताओं, आदर्शों, रूढ़ियों, पाखण्डों, कुरूपताओं, त्रासदी और विडंबनाओं की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी अभिव्यक्ति है | "बड़े भाई साहब" (1934) प्रेमचंद की अनेक लोकप्रिय और श्रेष्ठ कहानियों में से एक है | जिसका कथानक शिक्षा, ज्ञान-अनुभवों की महत्ता और हृदय-परिवर्तन पर आधारित दो भाइयों की संवाद-एकलाप शैली की घटनारहित मनोवैज्ञानिक सत्य की कथा है | यह बड़प्पन की कृत्रिमता से मुक्ति की कहानी है और कृत्रिमता बनाम सहजता-सरलता की महत्ता एवं वैशिष्ट्य की कहानी है | यह मनोवैज्ञानिक सत्य इस कहानी को कैसे विशिष्ट और प्रभावशाली बनाती है इस वैशिष्ट्य का अध्ययन करना ही लेख का मूल लक्ष्य है |

प्रेमचंद की कथा-दृष्टि का वैशिष्ट्य

प्रेमचंद के लिए कहानी की शक्ति चमत्कार में नहीं सरलता-सहजता और स्वभाविकता में है | उनकी कहानियाँ सरलता से ही आरंभ होती है और उसी सरलता से उसमें आदर्शवादी पुट के साथ समाप्त होती हैं | वे मानते हैं कि कहानी की शक्ति उसके घटना-विन्यास में न होकर उसके पात्रों की मनोगति में होता है | उनके अनुसार, "सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो |"[1] प्रेमचंद का मनोविज्ञान ऐसा सामान्य मनोविज्ञान है जो हमारे दैनिक जीवन की सामान्य घटनाओं और क्रियाकलापों में बराबर व्यक्त होता है | घटनाओं, स्थितियों और प्रसंगों को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करना हिन्दी कहानी के लिए प्रेमचंद की सबसे बड़ी देन है | प्रेमचंद की कहानी अंत तक वर्णनात्मक ही रहती हैं और अपने अंतिम दौर में उसमें सूक्ष्म व्यंजनात्मकता प्रभावशाली हो जाती है | उनमें घटनात्मकता कम और मनोगति प्रधान हो जाती है |

प्रेमचंद जीवन को साहित्य का आधार मानते हैं | विनोदशंकर व्यास को लिखे एक पत्र में वे लिखते हैं, "मैं जो चाहता हूँ वह यह कि कहानियों की अंतर्वस्तु जीवन से ली जाए और वे जीवन की समस्याओं का हल तलाशने की कोशिश करें |"[2] अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में कहते हैं: "मेरी कहानियाँ अक्सर किसी अनुभव या किसी ऐसी चीज़ पर आधारित होती हैं,जो मेरी कल्पनाशक्ति को छू जाती है | मैं उसे एक नाटकीय विन्यास देने की कोशिश करता हूँ | एक कहानी के जरिये मैं कोई दार्शनिक या भावनात्मक सत्य प्रकट करना चाहता हूँ | जब तक ऐसा कोई आधार अस्तित्व में नहीं होता, मैं अपनी कलम नहीं उठाता हूँ |"[3] चीनी आलोचक हू शिङथ्येन के शब्दों में, "महान यथार्थवादी लेखकों की विशिष्टता, लघुकथाओं के वर्णन में उनकी प्रवीणता में निहित रहती है | प्रेमचंद भी इसके अपवाद नहीं हैं |"[4] फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ प्रेमचंद की लेखकीय-वैशिष्ठ्य की पहचान बताते हैं कि "एक गरीब स्कूल शिक्षक होने दे नाते उन्होंने अपमानित और उपेक्षित लोगों के दुर्भाग्य के बारे में एक अवलोकनकर्त्ता की तरह नहीं, भागीदारी कि तरह लिखा, सहानुभूति प्रकट करनेवाले बाहरी व्यक्ति की तरह नहीं, सहभोक्ता कि तरह लिखा, इसीलिए उनकी कहानियाँ उतनी ही रूखी और सीधी-सादी हैं तथा उनकी भाषा उतनी ही सरल और बेबाक है, जितनी उनके चरित्रों कि जिंदगियाँ | और सबसे बड़ी बात तो ये कि उनकी कृतियाँ अपनी जमीन और अपने लोगों के अनेक अभावों को लेकर अगाध करुणा और प्यार से आप्लावित हैं|"[5]

'बड़े भाई साहब' कहानी का अंतर्कथ्य

"बड़े भाई साहब" शीर्षक कहानी मुख्यत: दो भाईयों की कथा है | बड़े भाई की उम्र 14 वर्ष की है और छोटा भाई उनसे पाँच साल छोटा यानी 9 वर्ष का है | दोनों अपने घर से दूर शहर में हॉस्टल में रहकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं | बड़ा भाई छोटे से तीन क्लास आगे है | शिक्षा के मामले में बड़े भाई को जल्दबाज़ी पसंद नहीं, बल्कि वे उसकी मजबूत बुनियाद के पक्षधर हैं | उनका विचार है कि मजबूत बुनियाद पर ही आलीशान महल बनते हैं | इसलिए एक ही कक्षा में दो या तीन साल लग जाना बुरा नहीं मानते हैं | छोटे भाई को डांटना-डपटना और निगरानी करना वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं और छोटे से उम्मीद करते थे कि वो उनके हुक्म का कड़ाई से पालन करे |

बड़े भाई स्वभाव से बड़े अध्ययनशील हैं | हरदम किताबों में डूबे रहते हैं जबकि छोटे भाई का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था | वह मौक़ा पाते ही खेलने निकल जाता था | बड़े भाई के डांटने पर मौन हो जाता | बड़े भाई उपदेश की कला में निपुण थे | ऐसी ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे ऐसे

सूक्ति-बाण चलाते कि छोटे के जिगर के टुकड़े टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती | बड़े भाई साहब बोले कि "अगर तुम्हें इस तरह उम्र गंवानी है तो बेहतर है; घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो | दादा कि गाढ़ी कमाई के रूपये क्यों बर्बाद करते हो?" छोटा फिर इरादा तो बनाता लेकिन खेलकूद की मस्ती और आनंद के सामने वह सबकुछ भूल जाता | इससे बड़े भाई को नसीहत और फजीहत का अवसर मिलता रहता है | छोटा उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहता, कमरे में दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो | नजरे मिले तो प्राण निकल जाए | छोटे को अपने सिर पर हमेशा एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती |लेकिन फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है छोटा भी फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद को छोड़ न पाता |

सालाना इम्तहान के परिणाम में बड़े भाई साहब फेल हो जाते हैं और छोटा न केवल पास होता है बल्कि अपने दर्जे में प्रथम भी आता है | अब दोनों भाइयों के बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया | इससे छोटे भाई के मन में कई बातें आईं कि भाई साहब को आड़े हाथ लूँ लेकिन उन्हें दुखी और उदास देखकर दिली हमदर्दी हुई और खुद पर लज्जा महसूस हुई | इस परिणाम से छोटे के मन में अभिमान और आत्मसम्मान बहुत बढ़ जाता है | अब बड़े भाई का रौब और आतंक ख़त्म होने लगता है | वह अब पहले से ज्यादा खेलने लग जाता है | लेकिन बड़े भाई की सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी | एक दिन जब छोटा दिनभर खेलकर दोपहर के भोजन के समय घर में घुसा तो भाई साहब उसपर टूट पड़े और बोले "देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ?... महज़ इम्तहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास | जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो |... तुमने तो अभी केवल एक दर्जा पास किया है, और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके | यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से पास नहीं हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गयी | मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती | कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है | इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता | सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए | मेरे फेल होने पर मत जाओ | मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आ जाएगा |... इसलिए मेरे कहना मानिये | लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज्यादा अनुभव है | जो कुछ कहता हूँ, उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा |" बड़े भाई साहब हर बार नए विषय और नए उदाहरण से छोटे भाई को लंबे उपदेश देते | फिर भी पढ़ाई में उसकी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रहती | वह इतना ही पढ़ता कि रोज का टास्क पूरा हो जाये किन्तु चोरों-का-सा जीवन भी काटने लगा |

फिर सालाना इम्तहान का परिणाम आया और संयोग से छोटा भाई फिर पास हो गया और बड़े भाई साहब फेल हो गये | इस बार भी छोटे ने बहुत मेहनत नहीं की थी फिर भी जाने कैसे वो दरजे में अव्वल आ गया, उसे बहुत अचरज था | बड़े भाई साहब ने तो बहुत परिश्रम किया था | एक-एक शब्द चाट गये थे | दिन रात पढ़ते रहते थे | उनका चेहरा कांतिहीन तक हो गया था | बेचारे फिर भी फेल हो गए | जब नतीजा सुनाया गया तो वे बहुत रोये | साथ में छोटा भी रोया उसके पास होने की खुशी आधी हो गई | अब दोनों भाइयों के बीच में केवल एक दर्जे का अंतर रह गया | छोटे भाई के मन में कुटिल भावना भी आई कि भाई साहब एक दर्जे और फेल हो जाएँ |

लेकिन फिर इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल दिया | आख़िर वे उसके हित के लिए ही तो डांटते हैं | इस नतीजे के बाद बड़े भाई साहब बहुत नर्म पड़ गये | छोटे को डाँटना छोड़ दिया | छोटे की स्वछंदता बढ़ने लगी और बड़े भाई की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा | छोटे का पढ़ना एकदम बंद हो गया और अपने खेलकूद तथा कनकौआ के शौक़ में दिनभर डूबा रहता | फिर भी बड़े भाई का अदब करता था| एक दिन संध्या समय, हॉस्टल से दूर एक कनकौआ लूटने के लिए छोटा भाई बेतहाशा दौड़ा जा रहा था | बालकों की पूरी सेना भी लगी थी | सहसा बड़े भाई से मुठभेड़ हो गई | उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले कि- "इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज़ नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो; बल्कि आठवीं जमात में आ गये हो और मुझसे केवल एक दर्जा नीचे हो | आख़िर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल करना चाहिए |.....मुझे तुम्हारी कमअक्ली पर दुख होता है | तुम ज़हीन हो, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह जेहन किस काम का, जो हमारे आत्म-गौरव कि हत्या कर डाले | तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज़ एक दर्जा नीचे हूँ, और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक़ नहीं; लेकिन यह तुम्हारी गलती है | तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी जमात में आ जाओ... अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ - लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है; उसे तुम क्या खुदा भी नहीं मिटा सकता | मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा | मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.लिट. और डी.फिल. ही क्यों न हो जाओ | समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है |... तो भाईजान, यह गुरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गये हो और अब स्वतंत्र हो | मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे | अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ | मैं जानता हूँ तुम्हें मेरी बातें ज़हर लग रही हैं..." इस डांट-फटकार से छोटे को अपनी लघुता का अनुभव हुआ और बड़े भाई साहब के प्रति मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई | छोटे की आँखें सजल देख बड़े भाई ने छोटे को गले से लगा लिया और कहा "मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता | मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है !" तभी संयोग से एक कटा हुआ कनकौआ इनके ऊपर से गुज़रा जिसकी डोर को बड़े भाई साहब ने लंबे होने के कारण लपक लिया और बेतहाशा हॉस्टल की ओर दौड़ पड़े | पीछे पीछे छोटा भाई और लड़कों का झुंड दौड़ रहा था |

'बड़े भाई साहब' कहानी का अंतर्जगत और अंतर्सत्य : सन 1934 में हंस पत्रिका में प्रकाशित "बड़े भाई साहब" कहानी प्रेमचंद की बहुचर्चित और बहुपठनीय कहानियों में से एक उत्कृष्ट कहानी है | यह आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है | यह कहानी अपने भीतर अनेक संदर्भों-प्रसंगों और सत्यों को समेटे हुए है | लेकिन प्रमुख रूप से यह कहानी अपने छोटे भाई के प्रति बड़े भाई के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की निष्ठापूर्वक निभाई गई भूमिका की कहानी है | बड़े भाई में जो चिंता, गंभीरता, सजगता, दृढ़ता, कर्मठता, अनुभवशीलता, कर्तव्यपरायणता, त्याग, करुणा और स्नेह के मानवीय गुणों और आदर्शों की सांस्कृतिक परंपरा भारतीय समाज में सदियों से संचारित है उन्हीं मानवीय मूल्यों और आदर्शों को बड़े कलात्मक रूप

से मनोवैज्ञानिक सत्य के साथ प्रेमचंद ने इस कहानी में सुरुचिपूर्ण मनोविनोद और हल्के व्यंग्यात्मक रूप में संयोजित किया गया है |

प्रेमचंद सहजता, सरलता और स्वछंदता को जीवन का सहज-स्वाभाविक गुण मानते हैं | कृत्रिमता और बनावटीपना जीवन की सरलता और सहजता को रुग्ण कर देता है | बड़े भाई के बड़प्पन के अतिरेक (अतिशयता) को ध्वस्त करना और बड़प्पन की जगह सहजता व सरलता को स्थापित करना ही इस कहानी का मनोवैज्ञानिक सत्य है | आलोचक शिवकुमार मिश्र मानते हैं कि, "इस कहानी को मनोवैज्ञानिक सत्य को उजागर करने वाली कहानी माना गया है | मनोवैज्ञानिक सत्य है, बड़े भाई के बड़प्पन का अयथास्थान (Misplaced) होना और छोटे भाई पर उस अयथास्थानित बड़प्पन का रोब गालिब करना | छोटे भाई का सच्चाई को जानते हुए भी चले आ रहे सम्बन्धों की गरिमा बनाए रहते हुए भी इस अयथास्थानित बड़प्पन का स्वीकार | कहानी उस बिन्दु पर भी अपनी मनोवैज्ञानिक पहचान को उजागर करती है जब समाप्ति के साथ कटे हुए कनकौए को लूटने के लिए दौड़ रहे बच्चों के साथ, अपने अयथास्थानित बड़प्पन के सारे बोझ को उतारते हुए बड़े भाई उस कनकौए को लूटते हुए स्कूल के हॉस्टल की तरफ भागते हैं, और छोटा भाई आश्चर्य-मिश्रित जिज्ञासा के साथ यह दृश्य देखता है|"[6] डॉ. हरदयाल इस प्रसंग को अलग नजरिये से देखते हैं, "कहानी के अंत में बड़े भाई साहब के चरित्र में परिवर्तन का संकेत किया गया है | बड़े भाई साहब भी छोटे भाई के रास्ते पर चल पड़े हैं | उन्होंने जान लिया है कि जो मेहनत करता है वह पिटता है और जो मेहनत नहीं करता है वह ऐश करता है | यही प्रतिपाद्य 'पूस कि रात' और 'कफ़न' का भी है | इसलिए यह कहा जाय कि उक्त तीनों कहानियों का प्रतिपाद्य और रूप एक ही है तो यह अत्युक्ति न होगी |"[7]मिश्रजी और हरदयाल जी के विचारों में यहाँ जो अंतर दिखाई दे रहा है वह उनके जीवन-मूल्यों और जीवन-सत्यों का है | हरदयाल जी का दृष्टिकोण जीवन-अनुभवों के सत्यों और जीवन-मूल्यों की उपेक्षा कर समाज के ऐसे कुटिल और अवसरवादियों की मानसिकता को महत्व देता हुआ दिखाई दे रहा है जो बिना परिश्रम के सफलता प्राप्त कर लेते हैं | जीवन-संघर्ष से हारकर हताशा और क्षोभ में ही ऐसे विचारों का जन्म होता है | ऐसा लगता है जैसे वे इस कहानी के साथ-साथ प्रेमचंद की अन्य कहानियों पर भी चुटकी ले रहे हैं | हरदयाल जी इस कहानी का मूल्य पकड़ नहीं पाये हैं |

ध्यान से देखा जाय तो बड़े भाई का उड़ते हुए कनकौए को लपककर पकड़ना और हॉस्टल की ओर तेजी से दौड़ पड़ना यह दर्शाता है कि आज उन्होंने अपने बड़प्पन के कृत्रिम खोल को उतार फेंक दिया है और छोटे भाई कि तरह जीवन के सहज और सरल रूप को ग्रहण कर मस्त हो जाते हैं | बड़प्पन के कृत्रिम बोझ से मुक्ति और सहजता की महत्ता का यह संदेश ही इस कहानी का सच्चा मूल्य है | ओढ़ी हुई कृत्रिम बड़प्पन से मुक्ति और अदब की मर्यादा के साथ जीवन की सहजता और सरलता का वैशिष्ठ्य ही इस कहानी की मूल व्यंजना है | दो-दो बार फेल होने के बाद भी अपने बड़प्पन के सींखचों में बंद जीवन को जिस सहजता से तोड़ते हुए (बड़े भाई का उड़ते कनकौए की डोर लपक कर हॉस्टल की ओर दौड़ पड़ना) बालपन की सहजवृतियों को जीवंत किया गया है वही आंतरिक सत्य इस कहानी का मनोवैज्ञानिक सत्य है |

"बड़े भाई साहब" कहानी शिक्षा के महत्त्व, खेलकूद की निरर्थकता, समय की सार्थक उपयोगिता और अवसर की सही पहचान आदि पक्ष को विशेषरूप से उजागर करती है | शिक्षा की महत्ता और जीवन-अनुभवों का वैशिष्ट्य इस कहानी का मूल

भाव है | बड़े भाई के माध्यम से छोटे भाई को पढ़ाने के लिए पूरी तरह निगरानी करना और पढ़ने के लिए डांट-फटकार लगाना, अँग्रेजी, विश्व इतिहास और गणित के विषयों की उलझनों और कठिनाइयों का बखान करना, टाइम-टेबिल बनवाना, माता-पिता के मेहनत की गाढ़ी कमाई को शिक्षा-हित में गंभीरता से सदुपयोग करना, न पढ़ने पर घर वापिस भेजने की धमकी देना, बाजारू लौंडों के साथ खेलकूद करने से रोकना, कनकौए न उड़ाने की सलाह देना, शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करना, जीवन-अनुभवों की महत्ता को समझाना आदि विभिन्न बातों पर शुरू से लेकर अंत तक गंभीर उपदेश देना इस कहानी का मुख्य संदेश हैं | बड़े भाई जितनी गंभीरता और कठोरता अपनी पढ़ाई के लिए रखते हैं उतना ही अपने छोटे भाई के लिए भी उम्मीद करते हैं | और रटन्तु विद्या की जगह सही ज्ञान और अभिप्राय की समझ को ज्यादा महत्त्व देते हैं| इस कहानी में प्रेमचंद का व्यक्तित्व और लेखक एक हो गए हैं | छोटे भाई को लगन से पढ़ने का उपदेश देते रहने के साथ उसकी कमियों को बताते रहना इसलिए रुचिकर लगता है क्योंकि यह सार्वजनिक के साथ साथ निजी अनुभव भी है | भले ही ये तर्कहीन और अनुचित उपदेश हों | "कहा जाता है कि इस दिलचस्प जीवनचित्र में अंकित घटनाएँ बचपन में लेखक के अपने जीवन में घटीं और कुछ उनकी आंखिन देखी थीं | संभवतः लेखक का निहितार्थ कुछ और होने पर भी कहा जा सकता है कि इस कहानी में हास्य एवं विनोद के साथ-साथ गंभीरता का भाव भी है |"[8] भीष्म साहनी इसी विशेषता की ओर इंगित करते हैं, "प्रेमचंद एक सम्पूर्ण इकाई हैं | उनके व्यक्तित्व व उनके लेखन में मनुष्य और कलाकार एक हो गए हैं; निजी और सार्वजनिक परस्पर ऐसे मिले हुए हैं कि उन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता |"[9]

प्रेमचंद शिक्षा-व्यवस्था के अंग रहे हैं | वे शिक्षक एवं शिक्षा-अधिकारी भी रहे हैं | शिक्षा व्यवस्था की भीतरी विसंगतियों और बुराइयों को वे भली-भांति जानते थे | अतः शिक्षा के महत्त्व के साथ साथ शिक्षा-व्यवस्था की विसंगतियों और विडंबनाओं को उजागर करना भी इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य है | प्रेमचंद ने अपनी अनेक रचनाओं में अपने समय की शिक्षा व्यवस्था की क्रूरतम विसंगतियों और भ्रष्टाचार को उजागर किया है | उदाहरणतः "कर्मभूमि" उपन्यास | जिसकी शुरुआत ही शिक्षा-व्यवस्था के क्रूर और शोषक रूप से होती है इस संदर्भ में उसे देखा-पढ़ा जा सकता है | "बड़े भाई साहब" कहानी के मुख्य पात्र बड़े भाई साहब इसी दूषित शिक्षा-व्यवस्था के शिकार होते हैं | परीक्षकों की अगंभीरता, निकम्मेपन और गैर-जिम्मेदाराना रवैये के कारण वे दो-दो बार एक ही दरजे में फेल होते जाते हैं | फेल होने के बाद पिछली बार से भी ज्यादा गंभीरता से पढ़ाई करना और एक-एक शब्दों को चाट जाना, भोर से लेकर रात तक पढ़ना, शरीर का कांतिहीन हो जाना, कठोर और अनथक परिश्रम से सभी विषयों का गहरा ज्ञान रखना आदि इतना करने के बाद भी फिर से फेल हो जाना दूषित-शिक्षा व्यवस्था का ही परिणाम है | प्रेमचंद इस दूषित शिक्षा व्यवस्था पर कड़ी चोट करते हैं | प्रेमचंदकालीन शिक्षा व्यवस्था समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण की बजाय विभाजित और शोषक समाज का निर्माण कर रहा है |

अँग्रेजी सभ्यता के संपर्क में रहने से गुलाम भारत के निम्नवर्गीय ग्रामीण समाज में शिक्षा के प्रति विशेष जागरूकता और चेतना का विकास होता है | शिक्षा ज्ञान और विकास का अनिवार्य साधन माना जाने लगा | लेकिन शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियाँ और कुरूपता पढ़ने वाले भारतीय छात्रों में भय और तनाव पैदा करती है | शिक्षा व्यवस्था बच्चों से उनका स्वाभाविक बाल जीवनवृतियों को

निगल रहा था | बड़े भाई साहब के चरित्र से यह बात स्पष्ट रूप से उजागर होती है | छात्रों की स्वाभाविक बाल जीवनवृतियों की सुरक्षा और विकास की कामना भी इस कहानी की प्रमुख चिंता है |

बड़े भाई का सम्पूर्ण चरित्र छोटे भाई की बातों के माध्यम से हम तक पहुंचता है | बड़े भाई का समग्र व्यक्तित्व छोटे भाई की दृष्टि और अनुभवों से देखा-समझा हुआ ही हमारे सामने आता है| प्रेमचंद में बाल मनोविज्ञान की विभिन्न अंतर्वृतियों की गहरी समझ है | दो भाइयों के माध्यम से बाल-मनोविज्ञान की विभिन स्थितियों और वृतियों को प्रेमचंद ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है | प्रेमचंद केवल सामाजिक-यथार्थ के ही नहीं अपितु मनोविज्ञान के भी महान कथाकार हैं | बाहरी और भीतरी स्थितियों का कुशल संयोजन ही प्रेमचंद को बड़ा रचनाकार बनाता है |

"बड़े भाई साहब" कहानी संदेश देती है कि कोई भी मनुष्य अपने कर्मों और कर्तव्यों से ही बड़ा होता है | कोई भी मनुष्य किसी सफलता से बड़ा नहीं होता बल्कि अपनी जिम्मेदारियों को उठाते हुए भी अगर असफल हो जाता है तो अपने कर्मों कि सच्चाई और कर्तव्यों कि ईमानदारी से वह बड़ा माना जाएगा | मनुष्य अपनी स्थिति, शक्ति, अवसर और सीमा को समझकर उसके अनुरूप आचरण करे | ईमानदार कर्म और कर्तव्य के प्रति गहरी निष्ठा और समर्पण से ही सच्चे व्यक्तित्व का निर्माण होता है | बड़े की भूमिका का निर्वाह करना आसान नहीं होता | उसकी हालत टीन के उस शेड जैसी होती है जो बारिश, तूफ़ान, ओलावृष्टि सब झेलता है, लेकिन उसके नीचे रहने वाले अक्सर कहते हैं कि यह आवाज़ बहुत करता है और गरम भी जल्दी होता है | अतः यह कहानी सच्चे कर्म और कर्तव्य के नैतिकता-बोध की कहानी भी कही जा सकती है |

भाषा और शिल्प की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट कहानी है | सपाटता और सरलता की शैली के साथ वर्णनात्मक रूप में यह कहानी लिखी गई है| भाषा की स्पष्टता, प्रवाहमयता, भाव और भाषा का कलात्मक सामंजस्य, भाषा और भावों के बीच गतिशील सौन्दर्य, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, अँग्रेजी, अरबी फ़ारसी और देसज, तद्भव तथा ग्रामीण देहाती शब्दावली के बहुप्रयोगशील शब्दों के द्वारा इस कहानी की भाषाई संरचना को आकर्षक और सरस बनाया गया है | भाषाई शक्ति के साथ कहन की अद्भुत और लुभावनी शैली इस कहानी में हल्का मनोविनोद का रस घोल देता है | प्रेमचंद ने साहित्य में आभिजात्य और कृत्रिम भाषा के वर्चस्व को तोड़ा है | भाषा के पुराने ढांचे को तोड़कर वे जनभाषा को स्थापित करते हैं | सुरेन्द्र चौधरी के शब्दों में, "प्रेमचंद ने भाषा के प्रचलित ढांचे को तोड़ा है | उर्दू में धीरे-धीरे, हिन्दी में हठात !....प्रेमचंद प्रचलित साहित्य-शैलियों की आलंकारिक और कृत्रिम रूप से सामासिक भाषा की कृत्रिमता से भली-भांति परिचित थे | ऐसी भाषा जनता के सामान्य जीवन-बोध के करीब न थी | प्रेमचंद का उद्देश्य अपने साहित्य को जनता तक ले जाना था | फलतः उनकी लड़ाई उस भाषिक ढांचे को उपलब्ध करने की लड़ाई थी जिसके द्वारा वे अपने को जनता से जोड़ते |"[10] प्रेमचंद जनभाषा के पक्षधर लेखक हैं | इसीलिए उनकी भाषा में जनभाषा की बहुभाषिक समरसता है | प्रेमचंद की भाषा सच्ची हिंदुस्तानी भाषा है | वे हिंदुस्तानी भाषा में सभी धर्मों, संस्कृतियों, क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों की भाषाओं के विविध रंगों को घोल कर नया सृजनात्मक रूप बनाते हैं | प्रेमचंद की खासियत यह है कि अपनी सर्जनात्मक और प्रगतिशील दृष्टि के कारण वे कहानी की पारंपरिक बुनावट को तोड़ते हुए चलते हैं | वे न तो अपनी पूर्व में लिखी गई कहानियों के शिल्प और ढांचे का अनुकरण करते हैं और ना ही उसका

विस्तार करने के पक्षधर हैं | प्रेमचंद अपनी हर कहानी में भाषा और संरचना का नया प्रयोग करते हैं | नये भाव और स्थितियों को सदैव नये शिल्प और ढांचे की तलाश रहती है | जब कोई बात अनुभव के आधार पर कही जाती है तो वह जरूर पुराने शिल्प और ढांचे को तोड़ कर नये शिल्प और ढांचे की संरचना करती है | इस बात को प्रेमचंद अच्छे से जानते हैं | अनुभवों की व्यापकता ही उनकी सर्जनात्मक भाषा की शक्ति है | इस कहानी में प्रेमचंद अनुभव की मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ भाषा का कलात्मक सौन्दर्य साथ-साथ लेकर चलते दिखाई देते हैं | हिंदुस्तानी भाषा में जीवन के मार्मिक अनुभवों को बड़े रसात्मक रूप में प्रेमचंद ने अपनी कुशल प्रतिभा से सँजोया हैं | रामविलास शर्मा के अनुसार,"उनकी शैली की चित्रमयता, भाषा पर असाधारण अधिकार, चरित्र-चित्रण का कौशल और हर जगह व्यंग्य और हास्य ढूंढ लेने की क्षमता उन्हें एक प्रभावशाली कलाकार बनाते हैं |"[11]

"बड़े भाई साहब" कहानी को बच्चे और प्रौढ़ दोनों एक समान पसंद करते हैं लेकिन दोनों के लिए इसकी अपील अलग अलग है | यही इस कहानी की महत्ता है | इसका कथ्य और इसकी भाषा बड़ी ही सरल, जीवंत, प्रवाहमय और व्यंग्य-विनोदपूर्ण है | इसकी भाषा में रोचकता और चुटीलापन है | जीवनशक्ति से सम्पन्न लोकप्रिय कथन इस कहानी को अनूठा बनाते हैं | हिन्दी और उर्दू की साझी विरासत का जीवंत दस्तावेज़ है यह कहानी| यह हिन्दी की जातीय गद्य का और उसकी कलात्मकता का उत्कृष्ट नमूना है |

संदर्भ ग्रंथ

1. कुछ विचार: प्रेमचंद, पृष्ठ 28, डायमंड पॉकेट बुक्स दिल्ली, संस्करण 2002
1. प्रेमचंद: विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता: संपा. मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह, रेखा अवस्थी पृष्ठ 283 राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्कारण 2008
2. वही, पृष्ठ 283
3. वही, पृष्ठ 328
4. वही, पृष्ठ 39-40
5. शिवकुमार मिश्र: कहानीकार प्रेमचंद: रचना दृष्टि और रचना शिल्प, पृष्ठ-56, लोकभारती प्रकाशन
6. संस्कारण-2010
7. कालजयी कथाकृति और अन्य निबंध: डॉ. हरदयाल पृष्ठ 22, सरस्वती प्रेस नई दिल्ली, स. 1981
8. प्रेमचंद: विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता: संपा. मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह, रेखा अवस्थी पृष्ठ 324 राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्कारण 2008
9. वही, पृष्ठ 288,
10. वही, पृष्ठ 183,
11. प्रेमचंद का युग: रामविलास शर्मा, पृष्ठ 118, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2011